6. साधन तथा साध्यों के बीच अंतर स्पष्ट नहीं :— रॉबिन्स ने जो भेद साध्यों तथा साधन के बीच किया है वह स्पष्ट नहीं है। जो भी साध्य था वह साधन बन जाता है। उदाहरणस्वरूप एक चिकित्साविज्ञान के विद्यार्थी के लिए डाक्टरी साध्य है लेकिन डाक्टर बन जाने पर वही साध्य आय अर्जन का साधन बन जाता है। इस प्रकार उद्देश्य एवं साधन के बीच स्थायी भेद नहीं किया जा सकता।

7. मनुष्य के व्यवहार को अधिक विवेकशील मानना गलत :— प्रो० रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र के अध्ययन में व्यक्ति को आवश्यकता

Scanned with CamScanner

से अधिक विवेकशील प्राणी मान लिया है। वे यह मानते हैं कि उपभोक्ता सोच-समझकर अपनी आवश्यकता की संतुष्टि के लिए व्यय करता है, ताकि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके। प्रो० रॉबिन्स जिस तरह मनुष्य को विवेकशील मानते हैं वैसा वह हमेशा नहीं होता। वह परिस्थितियों का दास होता है तथा परिस्थितिवश बिना सोचे-समझे, बिना तुलना किए व्यय करता है। ताकि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके। प्रो० रॉबिन्स जिस तरह मनुष्य को विवेकशील मानते हैं वैसा वह हमेशा नहीं होता। वह परिस्थितियों का दास होता है तथा परिस्थितिवश बिना सोचे-समझे, बिना तुलना किए व्यय करता है।

8. अर्थशास्त्र के नियमों को प्रकृतिक विज्ञान के नियमों के समान समझना गलत:-

प्रो० रॉबिन्स अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान मानते हुए उसके नियमों की तुलना प्राकृतिक विज्ञान के नियमों से करते हैं। लेकिन अर्थशास्त्र के नियम उतना सही नहीं होते। अर्थशास्त्र के नियम अनेक तत्वों द्वारा मानव-व्यवहार इत्यादि से प्रभावित होते हैं, जो स्वयं बदलते रहते हैं। इससे अर्थशास्त्र के नियम की क्रियाशीलता भी प्रभावित होती है।

9. मानवीय स्पर्श का अभाव:- रॉबिन्स की परिभाषा में मानवीय स्पर्श की कमी दिखती है। लेकिन मानव-विज्ञान तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक उसमें मानवीय स्पर्श न पाया जाए।

अर्थशास्त्र की आधुनिक परिभाषाएँ:- प्रो० रॉबिन्स की परिभाषा वैज्ञानिक होते हुए भी राष्ट्रीय आय, रोजगार एवं आर्थिक विकास के पहलुओं पर विचार नहीं कर पाती। आधुनिक परिभाषाएँ इन तत्वों पर बल देती हैं। कुछ आधुनिक परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं।

प्रो० सैमुएलसन की परिभाषा:- सैमुएलसन के अनुसार- "अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि व्यक्ति और समाज अनेक प्रयोगों में लाए जानेवाले ~~उत्पादन~~ उत्पादन के सीमित साधनों का एक समयावधि में विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन करने एवं उनकी समाज में

Oxford
Scanned with CamScanner

विभिन्न व्यक्तियों और समूहों में उपभोग हेतु वर्तमान तथा भविष्य के बीच बाँटने के लिए किस प्रकार चुनते हैं, ऐसा वे मुद्रा का प्रयोग करके करें अथवा इसके बिना करें।"

प्रो० सैमुएलसन ने अपनी परिभाषा में यह बताया है कि अर्थशास्त्र में, वैकल्पिक उपयोगवाले सीमित साधनों का प्रयोग दीर्घकाल में अधिकतम उत्पादन के लिए, किस प्रकार व्यक्तियों तथा समाज द्वारा किया जाता है, इसी का अध्ययन किया जाता है। उनकी परिभाषा प्रावैगिक या गतिशील है, जिसमें चुनाव की समस्या का गतिशील स्वरूप दिखाई देता है। उनके अनुसार आधुनिक अर्थशास्त्र की प्रमुख समस्या मंदी, बेकारी, तेजी इत्यादि के कारणों का अध्ययन करना है।

प्रो० बेन्हम की परिभाषा :— बेन्हम के अनुसार — "अर्थशास्त्र उन तत्वों का अध्ययन है जो रोजगार और जीवन-स्तर को प्रभावित करते हैं।" इस प्रकार बेन्हम ने अपनी परिभाषा में रोजगार तथा जीवन-स्तर पर अधिक बल दिया।

प्रो० हिक्स ने अर्थशास्त्र को एक विज्ञान कहा है। जिसमें मानव के व्यवसाय-संबंधी क्रियाओं का अध्ययन करता है।" उन्होंने वैसी क्रियाओं को व्यावसायिक माना है जो अधिक आय तथा लाभ को ध्यान में रखकर की जाती हैं। अर्थशास्त्र मनुष्य की उन्हीं क्रियाओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करने की कोशिश करता है। यह एक ऐसा शास्त्र है जो हमें मानव-समाज तथा मानव-व्यवहार को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।

प्रो० हिक्स की परिभाषा से यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन-क्षेत्र में उपयोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण जैसी व्यावसायिक क्रियाएँ आती हैं। उनकी परिभाषा सरल तथा व्यावहारिक है। लेकिन प्रो० हिक्स की परिभाषा में अर्थशास्त्र का विषय-क्षेत्र बहुत स्पष्ट नहीं हो पाता। उनकी परिभाषा प्रो० मार्शल की परिभाषा के अधिक करीब लगती है।

Scanned with CamScanner